Chap-3

तृतीय अध्याय

युगीन परिप्रेक्ष्य में नारी जीवन की समस्यायें

1. महिलाओं के कामकाजी होने के कारण
2. नारी जीवन की समस्यायें -दहेज प्रथा, अनमेल-विवाह, विधवा स्त्री की समस्या, नारी चरित्र के प्रति अविश्वास, स्त्री की अधीनस्थता की स्थिति, बलात्कार, वेश्यावृत्ति की समस्या, अवैध सन्तान, सम्बन्ध-विच्छेद, अकेली नारी, कामकाजी महिलायें, पारिवारिक शोषण, धार्मिक शोषण, नारी का आर्थिक शोषण, मानसिक शोषण की समस्या।

युगीन परिप्रेक्ष्य में नारी जीवन की समस्यायें

महिलाओं के कामकाजी होने के कारण–

1. आर्थिक विवशताएँ
2. शिक्षा का प्रसार
3. समाज का विकसित दृष्टिकोण
4. भौतिकता की दौड़
5. समय की रिक्तताको भरने का प्रयास

1. आर्थिक विवशताएँ –

महिला के कामकाजी होने में आर्थिक पक्ष को नकारा नहीं जा सकता। बढ़ती हुई महंगाई के कारण अब नगरीय परिवेश के मध्यवर्गीय परिवारों में यह ऐहसास गहराता जाता है कि परिवार को आर्थिक दृष्ट्या सुचारू रूप से चलाने के लिए अब एक पगार से काम नही चलता हैं इस प्रकार बढ़ती हुई महँगाई के कारण अब विवाहित महिलाएँ भी नौकरी करने लगी हैं। कहीं-कही तो उसे (नौकरी को) विवाह के लिए एक अतिरिक्त योग्यता के रूप में स्वीकृत किया जाता हैं। बहुत से लोग नौकरी शुदा लड़कियों से या नौकरी मिलने की संभावना वाली लड़कियों से बिना दहेज या कम दहेज में भी विवाह कर लेते हैं, क्यों कि उसके कारण परिवार को ठोस, मुकम्मिल आधार प्राप्त हो जाता हैं। पहले पिता के उपरान्त घर की आर्थिक, सामाजिक जिम्मेदारी पुत्र के कंधो पर आ

जाती थी, परन्तु इधर परिवर्तित परिस्थितियों में घर की ज्येष्ठा पुत्रियों पर वह दायित्व बोझ आ पड़ा हैं। घर परिवार की आर्थिक विवशताएँ छोटे भाई-बहनों का भविष्य, उनकी शिक्षा-दीक्षा उनके सामाजिक खर्च इत्यादि का निर्वाह करने के लिए कुछ लड़कियों को अपनी वैयक्तिक इच्छाओं की कुरबानी देनी पड़ती हैं। और पारिवारिक प्रतिश्रुतता के लिए उन्हें नौकरी करनी पड़ती हैं।

शिक्षा का प्रसार -

19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में नारी-शिक्षा की जो मुहिम चली उसने सामाजिक जीवन-मूल्यों में अनेक परिवर्तन पैदा किए। अकुशल क्षेत्र में मेहनत-मजदुरी का काम तो नारी पूर्व से ही करती आई हैं, परन्तु शिक्षित होकर अपनी बुद्धी-प्रतिभा और कौशल्य के बल पर पुरूषों के समान अन्य क्षेत्रों में नारी का नौकरी गामी होना शिक्षा के कारण ही सेभव हो पाया हैं। 'श्मशान चम्पा, की चम्पा, 'कृष्णकली' की कली 'भैरवी' की राजेश्वरी आदि पात्र शिक्षा के प्रसार के कारण ही कामकाजी महिलाओं के क्षेत्र में आ पाएँ हैं।

समाज का विकसित दृष्टिकोण-

भारतीय इतिहास में 19 वीं शताब्दी का महत्व अनेक दृष्टियों से हैं। 19 वीं शताब्दी में नवजागरण की प्रवृत्ति के कारण ब्रहा समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज, थियों सोफिकल सोंसायटी, रामकृष्ण मिशन जैसी धार्मिक सामाजिक सांस्कृतिक संस्थाओं के उन्नयन के कारण सहस्राधिक वर्षो से पदाक्रांत भारतीय चेतना ने एक नई करवट ली। राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन, महर्षि देवेन्द्र नाथ ठाकुर, दयानंद सरस्वती, नवीनचन्द्र राय, महादेव गोविन्द रानाडे आगारकर, गोपाल कृष्ण गोखले, श्रीमती ऐनी विसेन्ट, ज्योतिबा फूले, महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर प्रेमचन्द महर्षी करने प्रभूति महानुभावों के कारण स्त्री की ओर देखने का मध्ययुगीन संकुचित दृष्टिकोण शनैः शनैः ही दूर होने लगा और स्त्री को मनुष्य की दृष्टि से देखने परखने का एक सिलसिला शुरू हुआ। स्त्री का क्षेत्र अब घर की चहार दीवारी ही नहीं रहा, परन्तु शिक्षित-दीक्षित

होकर वह समाज की मुख्यधारा में सम्मिलित होने लगी। नौकरी धंधा करके वह आत्मनिर्भर होने लगी। इस समय के चिन्तकों ने भी इस बात पर बल दिया कि स्त्री को यदि उसकी सचमुच की गरिमा प्राप्त करनी हो तो आर्थिक दृष्टि से स्वनिर्भर होना ही होगा। मध्यमयुगीन कचुड़ल बुर्जुआ समाज में लड़की नौकरी करे यह बात रूढ़िवादियों को नागवार गुजरती थी। परन्तु अब इन बदली हुई परिस्थितियों में लडकियाँ न केवल नौकरी करती हैं, बल्कि ऐसा करते हुए स्वयं को लड़के का स्थानापन्न रूप में स्थापित भी कर लेती हैं। नारी ने अब राजनीति के क्षेत्र में भी प्रवेश किया हैं।

भौतिकता की दौड़–

आर्थिक विवशताएं, पारिवारिक प्रतिबद्धताएँ, महंगाई की मार प्रभृति कारणों से स्त्रियों का नौकरी करना तो मानवीय दृष्टिकोण के अंतर्गत आएगा, परन्तु कही-कही उच्चमध्यवर्गीय में जीवन-स्तर को ऊपर उठाने के लिए अधुनातम चीज-वस्तुओं को, सुख-सुविधा के भौतिक साधनों को बढ़ाने और बसाने के चक्कर में स्त्री-पुरूष दोनों को नौकरी करनी पड़ती हैं। यहाँ पर आर्थिक विवशताएँ नहीं होती। रोटी-रोजी का सवाल नहीं होता, सवाल होता हैं ; भौतिक सुख-समृद्धि को बढ़ाने का । और भौतिक सुख-समृद्धि का कोई ओर छोर नहीं होता। एक चीज बसा लेते हैं तो दूसरी चीज बसाने की इच्छा जाग्रत हो जाती हैं। घर को आधिकाधिक सुख-सुविधा सम्पन्न बनाने के लिए भी कई-स्त्रियाँ नौकरी करती हैं। बहुत सी स्त्रियाँ उससे भी संतुष्ट न होकर अवैध तरीकों से प्रमोशन पाने के लिए अनैतिक समझोते भी करती हैं।

समय की रिक्तता को भरने का प्रयास–

जैसे-जैसे नारी शिक्षा का प्रचार बढ़ रहा हैं, अधिकाधिक स्त्रियां-शिक्षित हो गई हैं। निम्न वर्ग, निम्न मध्य वर्ग तथा मध्य वर्ग की शिक्षित स्त्रियों को कई बार आर्थिक विवशताओं के वशीभूत होकर नौकरी करनी पड़ती हैं, परन्तु उच्च मध्यमवर्ग तथा उच्चवर्ग की महिलाएँ कई बार समय की रिक्तता को भरने के लिए नौकरी करती हैं।

सम्पन्नता के कारण घर-परिवार के छोटे-मोटे काम तो नौकरों और वौकरानियों द्वारा

The Smt. Hansa Mehta Library, Baroda University

हो जाता हैं। पति महोदय दिन-रात अपने व्यवसाय में डूबे रहते हैं। अतः समय की रिक्तता को भरने के लिए ऐसी महिलाएँ का नौकरी दामन थाम लेती हैं।

युगीन परिप्रेश्य में नारी जीवन की समस्यायें-

मध्यकाल से नारी अपने सीमित सामाजिक अधिकारों के साथ घर के भीतर सिमटी रही। उसका रूप केवल सेविका परिचारिका एवं भोग्या का ही था। वह अशिक्षा, अज्ञान, अनधविश्वास तथा धार्मिक रूढ़ियों का शिकार थी। उसे ही सारी सामाजिक विसंगतियों को सहना पड़ता था। वह पूर्णतः पराक्षित थी। अधिकार हीन और महत्वहीन जीवन के कारण ही, नारी शारीरिक और मानसिक दोनों स्तरों पर शोषण का शिकार हुई हैं और उसे अनेक कठिनायों का सामना करना पड़ा।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं। वह जिस समाज में रहता हैं, उस समाज में अच्छाई और बुराई दोनों ही विद्यमान होती हैं। शिवानी जी के युग में निम्न समस्यायें थी जिनसें उस युग की नारियों को जुझना पड़ता था-

1. दहेज प्रथा-

भारतीय परिवेश में विवाह में दहेज-प्रथा का प्रचलन जीवन की एक विडम्बना हैं। इस प्रथा ने मध्यमवर्गीय सामाजिक व्यवस्था को खोखला बना दिया। लड़की शिक्षित हो या अशिक्षित, आज दहेज के बिना उसका विवाह असम्भव हो गया हैं। दहेज प्रथा के कारण नारी का जीवन विसंगतियों का शिकार हो जाता हैं। इस समस्या के खिलाप शिवानी जी ने अपने उपन्यास 'कालिन्दी' की नायिका के द्वारा बहुत ही अच्छे संवाद बुलवाये हैं,''आपका बेटा हमें नहीं खरीदना हैं, जाइये इसी क्षण अपनी बारात लौटा ले जाइये और जहां अपने पुत्र का मुँह मांगा दाम मिले वहीं बेच आइये, बड़ा आश्चर्य है कि इतने समृद्ध व्यापारी होने पर भी आपको अपना बेटा बेचना पड़ा वह भी कुल अस्सी हजार में।''[1]

इसमें नारी संवेदना और उसकी नियति का यथार्थ चित्रण हैं जो मर्म को छूकर

1- कालिन्दी- शिवानी- पृ- 38

उसे उद्धेलित कर देता हैं।

कालिन्दी जो कि एक खुबसुरत युवती होने के साथ ही डाँ भी थी 'ऐसी लड़की से शादी करने के लिए भी दहेज की माँग की जाती हैं तो फिर साधारण लड़कियों की समस्या तो और भी विकट हो जाती हैं।

2. अनमेल विवाह–

विवाह स्त्री-पुरूष के जीवन की महत्वपूर्ण घटना हैं। विवाह बन्धन में बन्धने से पूर्व स्त्री-पुरूष में वैचारिक समानता आवश्यक हैं, अन्यथा विवाह अप्रिय बोझ बन जाता है। 'भैरवी' उपन्यास की राज-राजेश्वरी के अनमेल विवाह से उत्पन्न मानसिक यन्त्रणा का वर्णन इस तरह किया हैं,''कभी-कभी खाँसते-खाँसते वह थाली में थूक देता और फिर झुठी थाली पत्नी की ओर खिसकाकर कहता-इसी में खा लोना, ढेर सी सब्जी परस दी थी मुझे। भला इतनी सब्जी क्यों बनाती हैं तु?'' और वह चुपचाप अधिक सब्जी बनाये जने का दण्ड स्वयं भोगने के लिए थाली में बची-खुची जूठन का चरी-भूसा निरीह गैया की भाँति निगल जाती।''[1]

अनमेल विवाह एक दुःखी जीवन का आरम्भ हैं। यह एक सामाजिक विकृति हैं, ऐसे विवाह में अवस्था का अन्तर तो होता ही है, वैचारिक अन्तर भी हो सकता है। उत्पन्न दुख, सन्देह और कटुता जीवन को नरक बना डालते हैं। 'भैरवी' उपन्यास में राजेश्वरी का दुहाजू पति उसे वृद्ध होने के कारण हमेशा सन्देह की दृष्टि से ही देखता है और उसे प्रताणित करता रहता हैं।

शिवानी का मानना है कि अनमेल विवाह में उम्र का अन्तर होने से जीवन सुखी भी हो सकता हैं; पर वैचारिक मतभेद की परिणति सदैव दुःखद ही होती है।

'चौदह फेरे' की नन्दी गृहस्थी चलाने में कुशल थी, लेकिन कुशल प्रेमिका न बन सकी। कर्नल अपनी पत्नी से सन्तुष्ट नहीं था और ''उधर पति के निर्लज्ज प्रणयालाप से ऊबकर नन्दी कभी-कभी कानों में अंगुली धर लेती । हाय राम, कैसी छिछोरी बातें

1. भैरवी- शिवानी- पृ- 49

बकता रहता था रातभर । दिन में जिसके गम्भीर चेहरे के आवरण को चीरकर, हसी की विद्युत छटा सी भी नही दिखती थी, रात को वही संयमी पति अत्यन्त असंयमित आचरण कर बैठता था। कर्नल अपनी बर्फ की शिला-सी ठण्डी पत्नी पर कभी-कभी ऐसा उबल जाता कि छुट्टी शेष होने से पूर्व ही स्वयं छुट्टी कर देता और कलकत्ते भाग जाता। इसी तरह कर्नल के वैवाहिक जीवन में धीरे-धीरे विष घुलता गया और उसने घर आना भी कम कर दिया।''[1]

शिवानी जी ने उपन्यासों में अनमेल विवाह की समस्या को उजागर किया हैं।

3. विधवा स्त्री की समस्या-

समाज में विधवा स्त्रियों का जीवन दुःखों से भरा, करूणा तथा यातनामय हैं। पति की मृत्यु, स्त्री को नितान्त असहाय और निःराश्रित बना देती हैं। अकस्मात् उसके जीवन से उसकी इच्छाएँ और उसका आनन्द छीन लिया जाता हैं। सामाजिक कट्टरता और रूढ़ियाँ उसके जीवन को दूभर कर देती हैं।

वह अपने शेष जीवन कों असहनीय पीड़ा एवं वेदना के साथ बिताने को मजबूर हो जाती हैं। समाज में अकेली नारी का जीवन बहुत कष्टमय होता हैं। भारतीय समाज में वैधव्य की स्थिति एक अभिशाप हैं। समाज ऐसी स्त्रियों को किसी भी प्रकार के अधिकार नहीं देता। विधवा की स्थिति के माध्यम से शिवानी के उपन्यासों में स्पष्ट हो जाता हैं की वाधव्य भोगना इतना दुरूह नही हैं, जितना समाज ने उसे बना दिया हैं। 'श्मशान चम्पा' में शिवानी जी ने भगवती की दशा का चित्रण करके इस कड़वे सच से परिचित कराया है कि विधवा की दशा आश्रयदाता परिवार में दासी से भी गयी गुजरी हैं। पति की मृत्यु के बाद भगवती शारीरिक तौर से परिश्रम करने के योग्य नहीं रहीं पर वह ''सुबह उठते ही कमरे झाड़ती, फिर भाभी के पुत्र को चुप कराती, वह ढेर-ढेर कपड़े ? धोने बैठ जाती। भाभी को सरला, भगवती के वैधव्य ने सस्ते जासूसी उपन्यासों की दुनिया में डूब-डूब कर गोते लगाने की पूर्ण स्वतन्तत्रा दे दी थी।''[2]

1- चौदह फेरे- शिवानी - पृ- 11

2- श्मशान चम्पा- शिवानी- पृ- 28

'मायापुरी'' में दुर्गा नामक विधवा के वैधव्य का मार्मिक वर्णन है और 'भैरवी' में भी शिवानी ने राजेश्वरी के विधवा जीवन को बताया हैं।

4. नारी चरित्र के प्रति अविश्वास –

दाम्पत्य जीवन में विषमता का एक महत्वपूर्ण कारण, आपसी अविश्वास की भावना भी हैं। कभी-कभी पुरूष अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए अकारण स्त्री को अपमानित करता रहता हैं। 'भैरवी' में राजेश्वरी का पति उसके ऊपर शुरू से हीं अविश्वास रखता हैं। और उसे यातना देता हैं।

5. स्त्री की अधीनस्थता की स्थिति –

भारतीय समाज में बाल्यकाल से ही स्त्री को पुरूष के दुर्व्यवहार के प्रति सहनशील बने रहने की शिक्षा दी जाती हैं। बाल्यवस्था से ही स्त्री के मनोविज्ञान को पुरूषो के अनुकुल निर्मित किया जाता हैं। उसे पुरूष की दासी अथवा सेविका बताया जाता हैं। इसे ही स्त्री अपने प्राप्य के रूप में स्वीकार करती हैं। आगे चलकर पुरूष के प्रति नारी का शर्तहीन समर्पण ही उसकी दुर्वलता बन जाती हैं। उसका यह समर्पण उसे आजीवन पुरूष के अन्याय को सहने के लिए बाह्य कर देता हैं।

सुरंगमा में भी दृष्टव्य हैं। पति के शोषण से पीड़ित 'राजलक्ष्मी' मुक्ति के लिए आत्महत्या का मार्ग चुनती हैं। किन्तु इस प्रयास में वह सफल नहीं हो पाती। वह एक विजातीय व्यक्ति 'राबर्ट म्युरी' के साथ विवाह कर नया जीवन प्रारम्भ करती हैं। इस विवाह के बाद भी उसका पूर्व पति उसे उत्पीड़ित करता हैं।

6. बलात्कार –

बलात्कार एक घिनौना सामाजिक और नैतिक अपराध हैं। पुरूष की वासना की शिकार नारी कभी-कभी जीवन पर्यन्त इस अपराध-बोध से बाहर नहीं निकल पाती। सारा जीवन वह इस मानसिक यन्त्रणा की शिकार रहती हैं जो उसे सहज सामाजिक जीवन जीने में बाधा उत्पन्न करता हैं।

'भैरवी' में बताया गया है कि चन्दन का सुखी वैवाहिक जीवन उस समय बर्बाद

हो जाता हैं जब चलती ट्रेन में विक्रम को बाँधकर उसी के सामने कुछ असामाजिक तत्व चंदन पर बलात्कार करते हैं। ग्लानिवश चंदन चलती गाड़ी से कूद जाती हैं। इसी प्रकार शिवानी के उपन्यास 'रथ्या' की बसन्ती पर भी यह अत्याचार होता हैं। सर्कस का बुढ़ा मैनेजर जो उसे पुत्री कहकर सम्बोधित करता था उसके साथ बलात्कार करता हैं वह उस बिहड़ जंगल में पड़िया सी चीखती रही पर उसकी चीख सुनने वाला कोई नही था। इस प्रकार भोली-भाली बसन्ती का जीवन ही परिवर्तित हो जाता हैं। नारी पर यह एक अत्यन्त भयावह और घिनौना शोषण हैं उसका पूरा व्यक्तित्व ही कुण्ठित हो जाता हैं। समाज में बलाकृत स्त्री को शोषित अवस्था में ही अपना जीवन व्यतीत करना पड़ता हैं।

7. <u>वेश्यावृत्ति की समस्या</u> –

किस भी समाज में स्त्रियाँ वेश्यावृति जैसे घृणित एवं जघन्य व्यवसाय में विषम सामाजिक परिस्थितियों के कारण ही प्रवृत्त होती हैं। वे इस वृत्ति में सदैव हीनता व ग्लानि का अनुभव निरन्तर करती रहती हैं। सभ्य समाज में उनका प्रवेश निषिद्ध होता हैं। वेश्या स्त्रियों का जीवन शोषण तथा अत्याचार से भरपूर होता हैं। सभ्य समाज के पुरूष रात बिताने इनके पास आते हैं लेकिन दिन के उजाले में इनसे सम्बन्ध रखने से कतराते हैं।

शिवानी के 'रश्या' उपन्यास में इस पर प्रकाश डाला गया हैं ''छिपकर जूठन खाना है छोटे वैद, भाई बिरादरी के सामने जूठी-पत्तल में खा पाओंगे बोलों?''[1] समाज में वेश्या व्यवसाय को प्रोत्साहित करने वाले पुरूष ही होते हैं। पुरूषो के ही काम-विलास के लिए स्त्रियों को वेश्यावृत्ति में दीक्षित किया जाता हैं। वेश्यावृत्ति नारी शोषण का सबसे कुत्सित रूप हैं। एक बार स्त्री को इस व्यवसाय में आ जाने के बाद उसके मुक्ति के सभी मार्ग हमेशां के लिए बन्द हो जाते है। शिवानी ने अपने कई उपन्यासों में वेश्या जीवन को सशक्त ढंग से प्रस्तुत किया हैं। 'कृष्णकली' उपन्यास की कली और 'रश्या'

1- रथ्या- शिवानी- पृ- 85

उपन्यास की बसन्ती वेश्या के अपमानित व लांछित रूप को प्रस्तुत करती हैं। विवशताएँ एवम् परिस्थितियाँ स्त्री को इस वृत्ति के नरक में ढकेल देती हैं।

3. अवैध सन्तान -

विवाह से पूर्व जन्मने वाली सन्तानों को अवैध सन्तान कहा जाता हैं। शिवानी की पैनी लेखनी इस सामाजिक विकृति को भी उपन्यासों में प्रस्तुत कर गई। उनके लघु उपन्यास 'किशनुली' की किशनुलीएक विक्षिप्त लड़की हैं, लेकिन उसका अधखुला विक्षिप्त सौन्दर्य गाँव के वृद्ध शास्त्री काका जैसे विद्वान व्यक्ति को परास्त कर गया। गर्भिणी पगली को सभी ने दुरदुराते हुए भगा दिया, तब सत्य से अनजान काका की पत्नी ने मानवता का धर्म निभाते हुए पगली को अपने घर में शरण दी व उसके नवजात शिशु को अपना लिया, इस पर भी गाँववालों ने काकी को चैन से नहीं रहने दिया ''कितना क्रुर है, हमारा समाज। इसी अभागे नवजात शिशु का गला घोंट, यदि कपड़े में लपेट, किसी घूरे में फेंक दिया जाता तो शायद समाज को आपत्ति न होती; किन्तु किसी दयालु, सहृदया, सन्तानहीना गृहिणी ने उसे अपनी रीति गोद में समेट लिया, तो समाज ने बन्दुक तान ली।''[1] प्रश्न यह है कि काकी जैसे कितने लोग हैं? जो कि ऐसा कदम उठा पाते हैं, ''भाड़ में जाएँ तुम्हारे यजमान और तुम्हारा समाज। क्या अपनी इस अवस्था के लिए अकेली किसना ही अपराधिनी हैं? जिस हरामजादे-कमीने ने इस नाबालिग असहाय, उन्मादग्रस्त छोकरी का सर्वनाश किया हैं, उसे ढूँढ़कर पकड़ लाए तुम्हारा समाज, तब मैं जानू। दोष किसी का और दण्ड कोई और भोगे, यह कहाँ का न्याय हैं जी? किशनुली कहीं नहीं जाएगी। मैं पालूँगी उसकी सन्तान को, भले ही तुम्हारी बिरादरी हमारा हुक्का पानी बन्द कर दें।''[2]

इस तरह की सन्तानों के लिए हमारा समाज सिर्फ नारी को ही दोषी ठहराता हैं, पुरूषो को नही।

1- रतिविलाप- (किशनुली)- शिवानी- पृ- 54

2- वही -वहीं - शिवानी- पृ- 55

9. सम्बन्ध-विच्छेद -

पति-पत्नी का एक-दूसरे के प्रति वैवाहिक सम्बन्धों का समाप्त हो जाना सम्बन्ध-विच्छेद कहलाता हैं। शिवानी जी ने अपने कथानकों में इस समस्या को उठाया हैं। 'चौदह फेरे' में इसी समस्या के अन्तर्गत शिवानी जी ने लिखा हैं, ''नन्दी सब कुछ छोड़कर उसी दिन भाग गई थी, फिर नहीं लौटी। कर्नल भी जिद्दी पत्नी के स्वभाव से परिचित था और नन्दी भी जानती थी कि उसका दम्भी पति कभी भी उसे लिवाने नही आएगा। दोनों मे से एक भी झुकना जानता तो गृहदाह होने से बच जाता। धीरे-धीरे कर्नल के समाज में यह समाचार फैल गया कि मिसेज पाण्डे ने संन्यास ग्रहण कर लिया हैं।''[1] इसी उपन्यास के माध्यम से यह सामाजिक विकृति भी सामने आती हैं कि पति, पत्नी को त्यागकर दूसरा विवाह कर ले तो समाज उसे स्वीकृति दे देता हैं, लेकिन स्त्री के लिए यह अपराध हैं। 'चौदह फेरे' में नायिका नन्दी के घर के पास एक प्रौढ़ा रहती थी। विवाह के बाद पति उसे उसके काले रंग के लिए क्षमा नहीं कर पाया और वह अपने पिता के पास आ गयी थी। उसके पति ने तुरन्त दूसरा विवाह कर लिया। हमारे समाज में यह भी एक विकट नारी समस्या है कि सम्बन्ध-विच्छेद होने के बाद पुरूषों को तो समाज तुरन्त ही अपने में मिला लेता हैं लेकिन ऐसी स्त्रियों को वह उपेक्षा की नजरों से देखता जैसे, उसने कोई बड़ा अपराध कर दिया हो।

10. अकेली नारी की समस्या -

समाज में कामकाजी महिलाओं को कभी-कभी अकेले जीवन बिताना पड़ता हैं। ऐसे अवसरों पर वे अनेकों प्रकार के पुरूष शोषण की शिकार होती हैं। उन्हें हर पग पर असुरक्षा की भावना सताती हैं। पुरूषों की कामुक दृष्टि उनका सर्वत्र पीछा करती हैं। एक ओर परिवार से अलग रहने की विवशता के कारण वे मानसिक तनाव का अनुभव करती हैं और दूसरी ओर अन्य असुविधाओं को झेलती हुई वे अपने कामकाजी जीवन को अत्यन्त अप्रिय तथा असुविधाजनक स्थिति में बिताने को बाध्य होती हैं।

1- चौदह फेरे- शिवानी पृ- 28

'कृष्णकली' उपन्यास में 'कली' नामक पात्र के लिए हॉस्टल में स्थान पाने के लिए धर्म-परिवर्तन की शर्त रखी जाती हैं। और जब बह हॉस्टल से किराये के मकान में रहने जाती हैं तो वहाँ मकान मालिकों की असंगत शर्तो को मानने के लिए उसे मजबूर किया जाता हैं।

महानगरों में भीड़ भरे सार्वजनिक वाहनों में स्त्रियों के साथ अक्सर पुरूष अभद्र व्यवहार करते हुए दिखाई देते हैं।

11. कामकाजी महिलाओं की समस्या –

कार्यालयों में कामकाजी महिलाओं के साथ अनेकों अवसरों पर पुरूष उच्च अधिकारी अनपेक्षित रूप से अभद्र व्यवहार करते हैं। यहाँ तक कि वे अपने भातहत महिला कर्मचारियों से अवैध शारीरिक सम्बन्धों की कामना करते हैं। उनकी उस माँग को पूरी न करने पर दैनिक कामकाज में वे उनसे दुर्व्यवहार करते हुए देखे जा सकते हैं। कार्यालयों में पुरूषों के ऐसे व्यवहार लगभग हर कामकाजी स्त्री के साथ हों रहे हैं। कामकाजी स्त्री के आत्मसमर्पण के बदले उन्हें कई तरह के लाभ भी दिये जाते हैं। 'सुरंगमा' उपन्यास की नायिका एक मंत्री की वासना की शिकार हो जाती हैं। वह अनुभव करती हैं कि साधारण नौकरी पेशा युवतियों का जीवन, नगण्य एवं महत्वहीन होता हैं, और कोई भी पुरूष उसका अपमान कर सकता हैं।

'विषकन्या' उपन्यास में कामिनी एयर होंस्टेस हैं। उसे पायलेट डिसूजा जब भी फ्लाईट में होता छेड़ता रहता था।

12. पारिवारिक शोषण की समस्या –

भारतीय समाज में स्त्री को पत्नी, बहु, माता आदि रूपों में, अनेकों दायित्वों का निर्वाह व्यक्तिगत सुखों और सुविधाओं के बदले में करना पड़ता हैं। नारी केवल मशीन बनकर रह गई हैं। उसकी निजी आकांक्षाओं के लिए परिवार में कोई स्थान नहीं रहता। 'चल खुसरो घर आपने' उपन्यास की नायिका कुमुद पिता की मृत्यु के बाद घर में माँ और दो छोटे-भाई-बहन की जिम्मेदारी उठाने के लिए नौकरी करने चली

जाती हैं। जिनके लिए वह यह सब करती हैं वह भाई-बहन ही गलत रास्ते पर चल देते हैं। कुमुद को कही चैन नही मिलता और वह मानसिक तनाव से घिर जाती हैं।

'पूतों वाली' उपन्यास में पार्वती भी ऐसा दर्द भरा चरित्र हैं जिसे जिन्दगी भर प्यार नसीब नही हुआ। पार्वती को अपने पति से सदैव उपेक्षा मिली फिर भी वह पत्नी का फर्ज निभाती रही। पाँच-पाँच पुत्रों को उसने कितने कष्ट झेलकर बड़ा किया वो भी अपनी उस अभागिन बुढ़ी माँ को भूल गये कर्तव्य विमुख हो गये। किसी ने भी कभी उसकी इच्छाए, आकाक्षाए जानने की चेष्टा नहीं कि और अन्त में वह अधूरा जीवन जीते हुए मृत्यु को प्राप्त हो जाती हैं।

13. <u>धार्मिक शोषण की समस्या</u> -

भारत की अधिकांक्ष जनता धार्मिक मनोवृत्ति की हैं। उनकी इस धर्म भीरूता का लाभ समय-समय पर अनेक व्यक्ति उठाते हैं। ढ़ोंगी साधू-संन्यासियों का रूप धारण कर कुछ धूर्त व्यक्ति जनता को बहकाते हैं।

धर्म की आड़ में नारी का शोषण होता हैं। 'मायापुरी' उपन्यास में 'पीले बाबा' नामक ढोंगी साधु का चित्रण हुआ हैं। आश्रम में आने वाली प्रत्येक स्त्री को वह 'राधा' कहकर प्रणय निवेदन करता हैं। वह बलपूर्वक उनसे अपनी वासना शान्त करता हैं। 'चौदह फेरे' उपन्यास में भी ऐसे ढोंगी साधुओं का वर्णन किया गया हैं। जब अहल्या अपनी माँ से मिलने आश्रम जाती हैं तो उसकी बहन भी साथ में होती हैं। अहल्या वापस लौटते हुए रास्ता भटक जाती हैं तभी वह छुपकर उन दोनो साधुओं की बाते सुनती हैं जिन्हे उसने आश्रम के बाहर देखा था। दोनो आपस में बाते करते हैं कि एक भी लड़की हाथ आ पाती तो मजा आ जाता इसे ले जाकर शहर में बेच देते। यह सब सुनकर अहल्या का मन घृणा से भर उठता है। आमतौर पर ये ढोंगी साधु भोली-भाली औरतों को ही अपना निशाना बनाते हैं।

14. <u>नारी के आर्थिक शोषण की समस्या</u> -

पूँजीवादी अर्थ व्यवस्था ने समाज में मानव सम्बन्धों को बहुत प्रभावित किया हैं। अधिक

धनोपार्जन की प्रवृत्ति व्यक्ति को भ्रष्ट मार्ग पर ले जाती हैं। सम्पत्ति के लिए सम्बन्धों को नकारा जाने लगा। भौतिक सुख-समृद्धि ने मानव सम्बन्धों में शिथिलता उत्पन्न कर दी। आज सम्बन्धों की पहचान केवल आर्थिक स्थितियों के अनुरूप होती जा रही हैं। नये युग की जीवन शैली ने स्त्री को अनिवार्य रूप से कामकाजी बना दिया हैं। परिवार में बढ़ते हुए आर्थिक दबाव ने स्त्री की मानसिकता को बदला हैं। महिलाओं के अर्थोपार्जन के लिए उनके परिवार की सहमति आवश्यक होती हैं। ऐसी स्थिति में स्त्री की आर्थिक उपलब्धियों का लाभ, परिवार प्राप्त करता हैं। साथ ही सारा परिवार उससे यह भी अपेक्षा करता हैं कि वह अपने घरेलू दायित्वों का भी पूर्ण निर्वाह करे। इस प्रकार नारी को परिवार के प्रति दोहरे कर्तव्य को पूरा करना पड़ता हैं।

आर्थिक रूप से स्वतन्त्र होने के बावजूद भी स्त्री पारिवारिक तथा व्यावसायिक दोनो धरातलों पर शोषण का शिकार होती हैं। उसकी आर्थिक पराधीनता का लाभ उठाकर सहकर्मी पुरूष उसका शोषण करता हैं। नारी इस शोषण से आत्मरक्षा करनें में असमर्थ दिखाई देती है।

'सुरंगमा' उपन्यास का गजानन अपनी पत्नी राजलक्ष्मी को केवल पैसे कमाने की मशीन समझता हैं। यही कारण है कि जब पत्नी अपने पति के शोषण से मुक्त होने के लिए दूसरा विवाह कर लेती हैं तब भी वह राक्षस की तरह उसका पीछा नहीं छोड़ता वह उसे पूर्ववत् आंतकित करता रहता हैं। पुरूष के द्वारा नारी के शोषण का यह सबसे घिनौना रूप हैं। यह पुरूष के पतित आचरण और चरित्र को दर्शाता हैं।

मध्यमवर्गीय नारी का जीवन सेवा, समर्पण और कर्तव्यपालन में ही समाप्त हो रहा हैं। स्त्री की सहज आकांक्षाओं के प्रति परिवारिक संवेदना अक्सर शून्य रहती हैं।

15. मानसिक शोषण की समस्या -

नारी का स्वतन्त्र अस्तित्व आज के बौद्धिक युग में भी सन्देहास्पद ही हैं। सामाजिक रीति-रिवाज और पारिवारिक बन्धनों में जकड़ी नारी मानसिक स्तर पर टूट रही हैं।

उसके परिश्रम और उसकी संवेदनाओं के साथ अत्यन्त निर्दयता पूर्ण व्यवहार किया जा रहा हैं। स्वेच्छा और सुविधा को भोगने की मानसिकता आज भी नारी, अपने लिए नहीं बना पायी हैं इस सन्दर्भ में पुरूष के अहं से नारी का अहं जब भी टकराता हैं को चोट नारी को ही सहनी पड़ती हैं। मानसिक तनाव नारी के व्यक्तित्व को नष्ट कर देते हैं। वह इस मानसिक यातनाओं से छुटकारा पाने में असमर्थ दिखाई देती हैं। आरम्भ में पुरूष स्त्री को आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करता हैं। किन्तु स्त्री की प्रतिभा देखकर वह ईर्ष्यालु हो जाता हैं और तत्काल स्त्री के विकास को अवरूद्ध कर देता हैं। पुरूष का अन्तिम अस्त स्त्री को मानसिक धरातल पर आघात पहुँचाना होता हैं।

'रथ्या' उपन्यास की नायिका 'बसन्ती' नृत्य कला की अन्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार हैं। उसका प्रेमी उसकी नृत्य कला का अपमान कर उसे केवल एक वेश्या के रूप में ही देखता हैं और उसके नये आवास का नामकरण 'रथ्या' करता हैं। ''मैं क्या रखुँ वसुली इसका नाम तो विधाता ने ही रखा हैं, 'रथ्या'। 'रथ्या' कहते हैं ऐंसी सड़क को .... मतलब यह हैं कि बसन्ती वेश्याओं के मुहल्ले तक जाने वाली सड़क को रश्या ही कहते हैं।''[1]

स्त्री को सफलता की चरम सीमा पर प्रतिष्ठित देखकर पुरूष का अहं आहत होता हैं। बदले में वह उसे किसी न किसी रूप में आहत करना चाहता हैं। स्त्री को आहत करके ही उसके अहं की तुष्टी होती हैं। 'कृष्णकली' उपन्यास की नायिका 'कली' को अज्ञात कुलशीला होने के कारण अपमानित किया जाता हैं। वह आत्महत्या करने के बाध्य होती हैं। इसी मानसिक शोषण के कारण वह अकेले ही जीवन बिताने का संकल्प लेती हैं।

अतः शोषण की उपरोक्त स्थितियों ने स्त्री समाज को व्यापकता से प्रभावित किया हैं। इसी शोषण के कारण स्त्रियाँ कष्टमय स्थितियों से गुजर रही हैं। स्त्रियों की ये समस्याएँ जो उसके स्वतन्त्र व्यक्तित्व के विकास के लिए घातक हैं; समाज में बड़े

1- रथ्या - शिवानी- पृ- 44

व्यापक रूप से फैली हैं। जीवन स्त्री का अपना हैं। उसके माता-पिता, भाई अथवा पति का नही। स्त्री ने स्वयं उसे इतने हिस्सों में बाँटा, इतनी दुविधाओं में विभक्त किया हैं कि वह अपने जीवन को आखिरकार अपना नहीं बना पायी। दूसरों के प्रेम और द्वेष, उसे नियन्त्रित करते हैं। अपने आपको नियन्त्रित करने का अधिकार उसमें शेष नही रहा। कानून और वैधानिक सुरक्षा, बाहर से बहुत सुन्दर दिखाई देते है किन्तु वास्तव में नारी को इस व्यवस्था से कोई लाभ प्राप्त नही हो रहा हैं।

संदर्भ सूची

1. कालिन्दी : शिवानी : पृ.38
2. भैरवी : शिवानी : पृ.49
3. चौदह फेरे : शिवानी : पृ.11
4. श्मशान चम्पाः शिवानी : पृ.28
5. रथ्या : शिवानी : पृ.85
6. रतिविलाप(किशनुली) : शिवानी : पृ.54
7. वही : पृ.55
8. चौदह फेरे : शिवानी : पृ28
9. रथ्या : शिवानी : पृ44